प्रोटेवेंजेलियन;

या, मसीह के जन्म का एक ऐतिहासिक विवरण, और सदा कुँवारी मरियम, उसकी मां, याकूब छोटा(जिसे हलफई का पुत्र याकूब भी कहा जाता है), प्रभु यीशु के चचेरे भाई और भाई, मुख्य प्रेरित और यरूशलेम में ईसाइयों के पहले बिशप द्वारा।

[यह सुसमाचार याकूब को दिया गया है। प्राचीन पिताओं में इसके संकेत अक्सर मिलते हैं, और उनके भावों से संकेत मिलता है कि इसे ईसाई दुनिया में एक

बहुत ही सामान्य श्रेय प्राप्त हुआ था। इस पर स्थापित विवाद मुख्य रूप से ईसा मसीह के जन्म के समय जोसेफ की उम्र से संबंधित हैं, और वर्जिन के साथ उनकी शादी से पहले उनके बच्चों के साथ विधुर होने से संबंधित हैं। यह टिप्पणी करने के लिए सामग्री प्रतीत होती है, कि बाद के युग की किंवदंतियां जोसेफ के कौमार्य की पुष्टि करती हैं, एपिफेनियस, हिलेरी, क्राइसोस्टोम, सिरिल, यूथिमियस, थेफिलैक्ट, ओक्यूमेनियस और वास्तव में एम्ब्रोस तक सभी लैटिन पिता और बाद में ग्रीक पिता के बावजूद, बनाए रखते हैं जोसेफ की उम्र और परिवार की राय, इस पुस्तक की प्रामाणिकता में उनके विश्वास पर आधारित है। ऐसा माना जाता है कि इसकी रचना मूल रूप से हिब्रू में की गई थी। पोस्टेलस एमएस लाया।

लेवेंट के इस सुसमाचार का लैटिन में अनुवाद किया, और इसे बेसिल के एक प्रिंटर ओपोरिमस को भेजा, जहां बिब्लिअंडर, एक प्रोटेस्टेंट डिवाइन, और ज्यूरिख में देवत्व के प्रोफेसर ने इसे 1552 में मुद्रित किया। पोस्टेलस का दावा है कि यह पूर्वी चर्चों में सार्वजनिक रूप से विहित के रूप में पढ़ा जाता था, वे इसमें कोई संदेह नहीं रखते कि याकूब इसके लेखक थे। फिर भी, प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक चर्चों में कुछ सबसे अधिक विद्वान देवताओं द्वारा इसे अपोक्रिफल माना जाता है।]

अध्याय 1।

इस्राएल के बारह गोत्रों के इतिहास में हम पढ़ते हैं कि योआचिम नामक एक व्यक्ति था, जिसने बहुत धनी होने के कारण दुगना बनाया [ध्यान दें: अर्थात्, जितना देने के लिए बाध्य किया गया था, उससे अधिक दिया गया।] यहोवा परमेश्वर को भेंट, यह संकल्प करने के बाद:

मेरा सार सब लोगों के लाभ के लिए होगा, और मैं अपने पापों की क्षमा के लिए यहोवा परमेश्वर से दया पा सकता हूं। 2 परन्तु यहोवा के एक बड़े पर्व के समय जब इस्राएलियोंने अपक्की भेंट चढ़ाई, और योआकीम ने भी अपक्की भेंट चढ़ाई, तब महायाजक रूबेन ने यह कहकर उसका विरोध किया,

कि अपक्की भेंट देना तेरे लिथे उचित नहीं, यह देखते हुए कि तू ने कुछ नहीं किया है इसराइल में किसी भी मुद्दे को भूल गए। 3 इस पर योआचिम बहुत चिन्तित होकर बारह गोत्रों के नाम का विचार करने को चला गया, कि यह देखने के लिए कि क्या वह अकेला व्यक्ति है, जिसका कोई विवाद नहीं था। 4 परन्तु पूछने पर उसने पाया कि सब धर्मियोंने इस्राएल में वंश उत्पन्न किया है। 5 तब उस ने कुलपिता इब्राहीम को स्मरण किया, कि परमेश्वर ने उसके जीवन के अन्त में उसे उसका पुत्र इसहाक दिया है; जिस पर वह बहुत व्यथित था, और अपनी पत्नी को नहीं देखा था: 6 परन्तु जंगल में जाकर अपना तम्बू वहीं स्थिर किया, और चालीस दिन और चालीस रात उपवास किया, और अपने आप से कहा, 7 जब

तक मेरा परमेश्वर यहोवा मुझ पर दृष्टि न करे, तब तक मैं खाने-पीने के लिथे न नीचे जाऊंगा, वरन प्रार्थना ही मेरा मांस और पान होगा। [नोट: मूसा के चालीस दिन और रात के उपवास की नकल में, निर्गमन दर्ज किया गया। xxiv. 11, xxxiv। 28; देउत। ix. 9; एलिय्याह की, 1 राजा xix। 8; और क्राइस्ट, मैट। iv. 2.]

द्‌वितीय अध्याय।

इस बीच उसकी पत्नी अन्ना दोहरे खाते पर व्यथित और हैरान थी, और उसने कहा कि मैं अपनी विधवापन और अपनी बाँझपन दोनों के लिए शोक मनाऊँगा। 2 तब यहोवा का बड़ा जेवनार निकट आया, और उसकी लौंडी जूडिथ ने कहा, तू ऐसा कब तक अपके प्राण को दु:खती रहेगी? अब यहोवा का पर्ब्ब आ गया है, जब किसी का शोक करना अनुचित है। 3 इसलिथे यह चोखा ले, जो ऐसी वस्तुओं के बनानेवाले ने दिया है, क्योंकि यह उचित नहीं कि मैं दास होकर इसे पहिन लूं, परन्तु यह तेरे बड़े गुणी को शोभा देता है। 4 परन्तु हन्ना ने उत्तर दिया, मेरे पास से चला जा, मैं ऐसी बातोंका आदी नहीं हूं; इसके अलावा, यहोवा ने

मुझे बहुत दीन किया है। 5 मुझे डर है कि किसी दुष्ट ने तुझे यह दिया है, और तू मेरे पाप से मुझे अशुद्ध करने आया है। 6 तब उसकी दासी जूडिथ ने उत्तर दिया, कि जब तू मेरी न सुनेगा, तब मैं तेरा क्या बुरा चाहूं? 7 मैं तुझ से बड़ा श्राप नहीं चाह सकता, जितना तू नीचे है, क्योंकि परमेश्वर ने तेरी कोख बन्द कर रखी है, कि तू इस्राएल में माता न ठहरे। 8 इस पर हन्ना बहुत घबराई हुई थी, और अपके ब्याह का वस्त्र पहिने, अपरान्ह तीन बजे के लगभग अपक्की वाटिका में घूमने चली गई। 9 और उसने एक लॉरेल का पेड़ देखा, और उसके नीचे बैठ गया, और यह कहते हुए यहोवा से प्रार्थना की, 10हे मेरे पिता के परमेश्वर, मुझे आशीर्वाद

दे और मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे जैसे तू ने सारा के गर्भ को आशीर्वाद दिया, और उसे एक पुत्र इसहाक दिया . [नोट: जनरल xxi। 2.]

अध्याय III।

और जब वह स्वर्ग की ओर दृष्टि कर रही थी, तब उसे चिड़िया का घोसला दिखाई दिया, 2 और मन ही मन विलाप करते हुए कहा, हाय क्या मैं हूं, जिस ने मुझे उत्पन्न किया? और मुझे किस कोख ने जन्म दिया, कि मैं

इस्त्राएलियोंके साम्हने शापित हो, और मेरे परमेश्वर के भवन में मेरी निन्दा करे, और मेरी निन्दा करे: हाय, मैं किस से तुलना करूं? 3 मैं तुल्य नहीं हूं। हे यहोवा! वाह मैं हूँ, मेरी तुलना किससे की जा सकती है? 4 मैं पशु पशुओं के साम्हने नहीं हूं, क्योंकि हे यहोवा, पशु भी तेरे साम्हने फलते-फूलते हैं! वाह मैं हूँ, मैं किससे तुलनीय हूँ? 5 मेरी तुलना इन जल से नहीं की जा सकती, क्योंकि जल भी तेरे साम्हने फलवन्त है, हे यहोवा! वाह मैं हूँ, मेरी तुलना किससे की जा सकती है? 6 मैं समुद्र की लहरों के समान नहीं हूं; क्योंकि इन में जो मछलियां हैं, वे चाहे चैन से वा गतिमान हों, हे यहोवा, तेरी स्तुति करो! वाह मैं हूँ, मेरी तुलना किससे

की जा सकती है? 7 मैं तो पृय्वी के तुल्य नहीं, क्योंकि पृय्वी अपने फल उत्पन्न करती है, और हे यहोवा तेरी स्तुति करती है!

अध्याय IV।

तब यहोवा का एक दूत उसके पास खड़ा हुआ, और कहा, हे अन्ना, हे अन्ना, यहोवा ने तेरी प्रार्थना सुनी है; तू गर्भवती होगी और उत्पन्न होगी, और तेरे वंश की चर्चा सारे जगत में होगी। 2 और हन्ना ने उत्तर दिया, मेरे परमेश्वर

यहोवा के जीवन की शपथ, जो कुछ मैं उत्पन्न करूं, चाहे वह नर हो या नारी, मैं उसे अपने परमेश्वर यहोवा को अर्पण करूंगा, और वह जीवन भर पवित्र वस्तुओं में उसकी सेवा टहल करेगा। 3 और देखो, दो स्वर्गदूत उस से कहने लगे, सुन, तेरा पति योआकीम अपके चरवाहोंके संग आ रहा है। 4 क्योंकि यहोवा का एक दूत भी उसके पास उतरकर कहने आया है, कि परमेश्वर यहोवा ने तेरी प्रार्थना सुन ली है, फुर्ती करके चला जा, क्योंकि देख तेरी पत्नी हन्ना गर्भवती होगी। 5 तब योआकीम ने जाकर अपके चरवाहोंको बुलवाकर कहा, कि मेरे पास निर्दोष वा निर्दोष दस भेड़ के बच्चे ले आओ, और वे मेरे परमेश्वर यहोवा के लिथे ठहरें। 6 और बारह

निर्दोष बछड़े मेरे पास ले आओ, और बारह बछड़े याजकोंऔर पुरनियोंके लिथे ठहरें। 7 मेरे लिये सौ बकरियां भी लाओ, और सौ बकरियां सारी प्रजा के लिथे ठहरें। 8 तब योआकीम गड़रियोंके संग नीचे गया, और हन्ना फाटक के पास खड़ा हो गया, और योआकीम को चरवाहोंके संग आते देखा। 9 और वह दौड़कर उसके गले से लिपट गई, और कहा, अब मैं जानती हूं, कि यहोवा ने मुझ पर बड़ी आशीष दी है। 10 क्योंकि देखो, मैं जो विधवा थी, अब विधवा न रही, और मैं जो बांझ थी गर्भवती होगी।

अध्याय V।

और योआकीम पहिले दिन अपके घर में रहा, परन्तु दूसरे दिन अपक्की भेंट ले आया, और कहा, 2 यदि यहोवा मुझ पर अनुग्रह करे, तो उस थाली को जो याजक के माथे पर है, रहने दे। ऐसी खोजों के लिए पुजारी पहनने के लिए। एक्सोड देखें। xxviii. 36, और सी., और स्पेंसर डी उरीम एट थुम्मिम।] इसे प्रकट करते हैं। 3 और उस ने उस प्याले को जो याजक ने पहिने थे, सम्मति करके देखा, और क्या देखा, कि उस में पाप न पाया गया। 4 योआकीम ने कहा, अब मैं जान गया हूं, कि यहोवा मुझ पर अनुग्रह

करता है, और मेरे सब पापोंको दूर कर दिया है। 5 और वह धर्मी ठहराए हुए यहोवा के भवन से उतरकर अपके घर को गया। 6 और जब हन्ना के नौ महीने पूरे हुए, तब वह निकली, और दाई से कहा, मैं क्या उत्पन्न की है? 7 और उस ने उस से कहा, हे एक लड़की। 8 तब हन्ना ने कहा, यहोवा ने आज के दिन मेरे मन की बड़ाई की है; और उसने उसे बिस्तर पर लिटा दिया। 9 और जब उसके शुद्ध होने के दिन पूरे हुए, तब उस ने उस बालक को दूध पिलाया, और उसका नाम मरियम रखा।

अध्याय VI।

और बालक का बल प्रति दिन बढ़ता गया, और जब वह नौ महीने का हुआ, तब उसकी माता ने उसे भूमि पर लिटा दिया, कि वह खड़ा हो सके; और जब वह नौ कदम चल चुकी थी, तो वह फिर अपनी माँ की गोद में आ गई। 2 तब उसकी माता ने उसे पकड़कर कहा, मेरा परमेश्वर यहोवा जीवित है, जब तक मैं तुझे यहोवा के भवन में न ले आऊं, तब तक तू इस पृथ्वी पर फिर न चलना। 3 उसके अनुसार उसने अपने कक्ष को एक पवित्र स्थान बनाया,और उसके पास आने के लिए कुछ भी असामान्य या

अशुद्ध नहीं हुआ,परन्तु इस्राएल की कुछ निर्मल बेटियों को न्यौता दिया, और उन्होंने उसे खींच लिया। 4 परन्तु जब बालक एक वर्ष का हुआ, तब योआकीम ने एक बड़ी जेवनार की, और याजकों, शास्त्रियों, पुरनियोंऔर सब इस्राएलियोंको न्यौता दिया; 5 तब योआकीम ने उस कन्या को महायाजकोंके लिथे भेंट की, और उन्होंने उसको यह कहकर आशीष दी, कि हमारे पितरोंका परमेश्वर इस लड़की को आशीष दे, और उसका नाम पीढ़ी से पीढ़ी तक प्रसिद्ध और चिरस्थाई रखे। और सब लोगों ने उत्तर दिया, ऐसा ही हो, आमीन। 6 तब योआकीम ने उसे दूसरी बार याजकों के साम्हने दिया, और उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया, और कहा, हे परमप्रधान परमेश्वर, इस लड़की की सुधि ले, और उस पर

अनन्त आशीष दे। 7 इस पर उसकी माता ने उसे उठाकर छाती दी, और यहोवा के लिये यह गीत गाया। [नोट: 1 सैम की तुलना करें। ii., &c., ल्यूक i के साथ। 46.] 8 मैं अपके परमेश्वर यहोवा के लिथे एक नया गीत गाऊंगा, क्योंकि उस ने मेरी सुधि ली, और मेरे शत्रुओं की नामधराई मुझ से दूर की, और अपके धर्म का फल मुझे दिया है, कि अब उसका वर्णन किया जाए। रूबेन के पुत्र, कि अन्ना चूसती है। 9 तब उस ने उस बालक को उस कोठरी में रखा जिसे उस ने पवित्रा किया या, और वह निकलकर उन की सेवा टहल करने लगी। 10 और जब पर्ब्ब समाप्त हो गया, तब वे आनन्दित हुए और इस्राएल के परमेश्वर की स्तुति करते हुए चले गए।

अध्याय VII।

परन्तु लड़की बड़ी हो गई, और जब वह दो वर्ष की थी, तब योआचिम ने हन्ना से कहा, हम उसे यहोवा के भवन में ले जाएं, कि हम अपनी मन्नत पूरी करें, जो हम ने यहोवा परमेश्वर से की है, ऐसा न हो कि वह क्रोधित हो हमारे साथ, और हमारी पेशकश अस्वीकार्य होगी। 2 परन्तु हन्ना ने कहा, हम तीसरे वर्ष की बाट जोहते रहें, ऐसा न हो कि वह अपके पिता को जानने में खो जाए। तब योआकीम ने कहा, हम प्रतीक्षा करें। 3 और जब बालक तीन वर्ष का हुआ, तब योआकीम ने कहा, हम इब्रियोंकी

अपक्की अपक्की बेटियोंको बुलवाएं, और वे एक एक दीपक लेकर ज्योति करें, कि वह बालक फिर न फिरे, और उसका मन यहोवा के मन्दिर में लगा रहेगा। 4 और उन्होंने ऐसा ही तब तक किया जब तक वे यहोवा के भवन में नहीं चढ़ गए। और महायाजक ने उसे ग्रहण किया, और उसे आशीर्वाद दिया, और कहा, मरियम, प्रभु परमेश्वर ने तेरा नाम पीढ़ी पीढ़ी तक बढ़ाया है, और समय के अंत तक यहोवा तेरे द्वारा इस्राएल के बच्चों को अपना छुटकारे दिखाएगा, 5 और उस ने उसे वेदी की तीसरी सीढ़ी पर रखा, और यहोवा ने उस पर अनुग्रह किया, और वह अपके पांवोंसे नाचने लगी, और इस्राएल का सारा घराना उस से प्रीति रखता या।

अध्याय VIII।

और उसके माता-पिता आश्चर्य से भर गए, और परमेश्वर की स्तुति करते हुए चले गए, क्योंकि लड़की उनके पास वापस नहीं लौटी। 2 परन्तु मरियम वहां पक्की कबूतरी की नाईं मन्दिर में रही, और एक स्वर्गदूत के हाथ से अपना भोजन पाई। 3 और जब वह बारह वर्ष की हुई, तब याजक एक महासभा में मिले, और कहा, देख, मरियम बारह वर्ष की है; हम उसके साथ क्या करें, क्योंकि कहीं ऐसा न हो कि हमारे परमेश्वर

यहोवा का पवित्र स्थान अशुद्ध हो जाए? 4 तब याजकों ने महायाजक जकर्याह से कहा, क्या तू यहोवा की वेदी पर खड़ा होकर पवित्र स्थान में प्रवेश करके उसके विषय में बिनती करता है, और जो कुछ यहोवा तुझ पर प्रगट करे, वही करना। 5 तब महायाजक परमपवित्र स्थान में गया, और न्याय की झिलम अपने साथ ले गया [नोट: निर्गमन देखें। xxviii. 22, और सी.] ने उसके विषय में प्रार्थना की; 6 और यहोवा का दूत उसके पास आकर कहने लगा, हे जकरयाह, जकरयाह, निकल जा, और लोगोंके सब विधुरोंको बुलवा ले, और उन में से हर एक अपक्की लाठी ले आए, और जिस से यहोवा बताएगा चिन्ह मरियम का पति होगा। 7 और

चिल्लानेवाले सारे यहूदिया में निकल गए, और यहोवा की तुरही फूंकी गई, और सब लोग दौड़कर एक संग मिले। 8 यूसुफ भी उन से भेंट करने को निकल गया; और जब वे मिले, तब वे अपनी लाठी लेकर महायाजक के पास गए। 9 जब महायाजक ने उनकी लाठी ली, तब वह मन्दिर में प्रार्थना करने को गया; 10 और जब वह अपनी प्रार्थना पूरी कर चुका, तब उस ने छड़ें लीं, और जाकर उन्हें बांट दिया, और कोई चमत्कार उन पर न हुआ। 11 और अन्तिम लाठी को यूसुफ ने ले लिया, और क्या देखा, कि एक कबूतरी लाठी में से निकलकर यूसुफ के सिर पर उड़ गई। 12 तब महायाजक ने कहा, यूसुफ तू ही है, जिसे यहोवा की कुँवारी लेने के

लिथे उसके पास रखने के लिथे चुना गया है। 13 परन्तु यूसुफ ने यह कहकर इन्कार कर दिया, कि मैं तो बूढ़ा हूं, और उसके बच्चे भी हैं, परन्तु वह जवान है। , और मुझे डर है कि कहीं मैं इस्राएल में हास्यास्पद न लगूं। 14 तब महायाजक ने उत्तर दिया, हे यूसुफ, अपके परमेश्वर यहोवा का भय मान, और स्मरण रख कि परमेश्वर ने दातान, कोरह और अबीराम के साथ कैसा व्यवहार किया, कि उनके विरोध के कारण पृय्वी ने उन्हें कैसे खोलकर निगल लिया। 15 सो अब हे यूसुफ, परमेश्वर का भय मान, कहीं ऐसा न हो कि तेरे घराने में ऐसी बातें हों। 16 तब यूसुफ डरकर उसे अपके घर ले गया, और यूसुफ ने मरियम से कहा, सुन, मैं

तुझे यहोवा के भवन में से उठा ले गया हूं, और अब तुझे अपके घर में छोड़ दूंगा; मुझे अपने भवन निर्माण के व्यापार पर ध्यान देना चाहिए। हे यहोवा तेरे संग रहे।

अध्याय IX।

और ऐसा हुआ, कि याजकोंकी सभा में यह कहा गया, कि हम भवन के लिथे नया परदा बनाएं। 2 और महायाजक ने कहा, दाऊद के गोत्र की सात निर्मल कुंवारियों को मेरे पास बुला। 3 तब

कर्मचारी जाकर उन्हें यहोवा के भवन में ले आए, और महायाजक ने उन से कहा, अब मेरे साम्हने चिट्ठी डाल, कि तुम में से कौन सोने का धागा फेरेगा, कौन नीला, कौन लाल, कौन मलमल, कौन , और असली बैंगनी कौन। 4 तब महायाजक ने मरियम को जान लिया, कि वह दाऊद के गोत्र की है; और उस ने उसको बुलाया, और वह लाल बैंजनी रंग उसके चिट्ठी पर फेरने के लिथे गिर पड़ा, और वह अपके घर चली गई। 5 उस समय से महायाजक जकरयाह गूंगा हो गया, और जब तक जकरयाह फिर से बोलता तब तक शमूएल अपने कमरे में रखा गया। 6 परन्तु मरियम ने असली बैंजनी ले कर उसे घुमाया। 7 और वह एक घड़ा ले कर जल भरने

को निकल गई, और यह शब्द सुना, कि अनुग्रह से परिपूर्ण तेरी जय हो, [ध्यान दें: लूका i. 28, और ग.] यहोवा तेरे संग है; तू स्त्रियों में धन्य है। 8 और उस ने दायीं और बायीं ओर दृष्टि की, कि वह शब्द कहां से आया, और थरथराते हुए अपके घर में घुस गई, और जलपोत को बिछाकर बैंजनी ले कर अपके आसन पर बैठ गई, कि उस पर काम करे। . 9 और यहोवा का दूत उसके पास खड़ा होकर कहने लगा, हे मरियम, मत डर, क्योंकि परमेश्वर की दृष्टि में तुझ पर अनुग्रह है; [नोट: ल्यूक द्वितीय। 39, और सी.] 10 जो उसने सुना, उसने अपने आप से तर्क किया कि उस तरह के अभिवादन का क्या अर्थ है। 11 तब स्वर्गदूत ने उस से कहा,

यहोवा तेरे संग है, और तू गर्भवती होगी।12 जिस पर उस ने उत्तर दिया, कि क्या! क्या मैं जीवते परमेश्वर के द्वारा गर्भ धारण करूं, और अन्य सब स्त्रियों की नाईं उत्पन्न करूं? 13 परन्तु स्वर्गदूत ने उत्तर दिया, हे मरियम ऐसा नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की शक्ति तुझ पर छाया करेगी; 14 इस कारण जो तुझ से उत्पन्न होगा वह पवित्र ठहरेगा, और जीवते परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा, और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपके लोगोंको उनके पापोंसे बचाएगा। 15 और देखो, तेरी चचेरी बहन इलीशिबा के भी बुढ़ापे में उसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। 16 और जो बांझ कहलाती थी, उसका यह छठा महीना है; क्योंकि परमेश्वर के साथ कुछ भी असंभव नहीं है। 17 तब मरियम ने कहा,

यहोवा की दासी को देख; मुझे तेरे वचन के अनुसार हो। 18 और जब वह अपना बैंजनी रंग गढ़ चुकी, तब उसे महायाजक के पास ले गई, और महायाजक ने उसे यह कहकर आशीर्वाद दिया, कि मरियम, परमेश्वर यहोवा ने तेरे नाम की बड़ाई की है, और तू उस युग के सब युगोंमें आशीष पाएगा दुनिया। 19 तब मरियम आनन्द से भरकर अपक्की चचेरी बहन इलीशिबा के पास गई, और द्वार खटखटाया। 20 जिसे सुनकर इलीशिबा दौड़ी, और उसके पास खोलकर आशीर्वाद दी, और कहा, मेरे लिथे यह कहां से है, कि मेरे प्रभु की माता मेरे पास आए? 21 देखो! जैसे ही तेरे नमस्कार का शब्द मेरे कानों तक पहुंचा, वह उछल पड़ा और तुझे आशीर्वाद दिया। 22 परन्तु मरियम उन सब रहस्यमयी बातों से अनभिज्ञ होकर,

जो प्रधान स्वर्गदूत जिब्राईल ने उस से कही थीं,
अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाकर कहा, हे प्रभु! मैं
क्या हूं, कि पृथ्वी की सारी पीढ़ी मुझे धन्य कहें? 23
पर यह समझकर कि वह प्रतिदिन बड़ी होती जाती है,
और डर के मारे अपने घर चली गई, और
इस्त्राएलियोंसे छिप गई; और जब ये सब बातें घटीं
तब वह चौदह वर्ष का था।

अध्याय X।

और जब उसका छठा महीना आया, तब यूसुफ अपके घराने से, जो उसका काम था, घर से लौटा, और घर में जाकर कुँवारी को बड़ा हुआ पाया। 2 तब उस ने मुंह पर वार करते हुए कहा, मैं अपके परमेश्वर यहोवा की ओर किस मुंह से देखूं? वा मैं इस युवती के विषय में क्या कहूं? 3 क्योंकि मैं ने अपके परमेश्वर यहोवा के भवन में से उस को कुँवारी प्राप्त की है, और उसकी ऐसी रक्षा न की! 4 इस रीति से किस ने मुझे धोखा दिया है? किस ने मेरे घर में यह बुराई की है, और कुँवारी को मुझ से बहकाकर अशुद्ध किया है? 5 क्या आदम का इतिहास मुझ में पूरा नहीं हुआ? 6 क्योंकि अपनी महिमा के क्षण में ही सर्प ने आकर हव्वा को अकेला पाया, और उसे बहकाया। 7 ठीक इसके बाद मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ है। 8 तब

यूसुफ ने भूमि पर से उठकर उसे बुलाया, और कहा, हे परमेश्वर जिस पर तू ने इतना अनुग्रह किया है, तू ने ऐसा क्यों किया है? 9 तू ने अपने प्राण को, जो परमपवित्र स्थान में शिक्षा ग्रहण किया, और स्वर्गदूतोंके हाथ से अपना भोजन ग्रहण किया, क्यों इस प्रकार अशुद्ध किया है? 10 परन्तु उस ने आँसुओं की धारा के साथ उत्तर दिया, मैं निर्दोष हूँ, और किसी को नहीं जानती। 11 तब यूसुफ ने कहा, तू गर्भवती क्यों है? 12 मरियम ने उत्तर दिया, कि मेरा परमेश्वर यहोवा जीवित है, मैं नहीं जानती कि किस रीति से। 13 तब यूसुफ बहुत डर गया, और यह सोचकर कि उसके साथ क्या किया जाए, वह उसके पास से चला गया; और इस प्रकार उसने अपने आप से तर्क किया: [नोट: मैट देखें। मैं। 18.] 14 यदि मैं

उसके अपराध को छिपाऊं, तो यहोवा की व्यवस्था के अनुसार मैं दोषी ठहरूंगा; 15 और यदि मैं उसे इस्त्राएलियोंके साम्हने पाऊं, तो मुझे भय है, कहीं ऐसा न हो कि वह स्वर्गदूत के द्वारा गर्भवती हो जाए, और मैं निर्दोष के प्राण को पकड़वाकर पकड़वाऊं। 16 सो मैं क्या करूं? मैं उसे निजी तौर पर बर्खास्त कर दूंगा। 17 तब उस पर रात पड़ी, जब यहोवा के एक दूत ने उसे स्वप्न में दर्शन देकर कहा,18 उस युवती को लेने से मत डर, क्योंकि जो कुछ उसके भीतर है वह पवित्र आत्मा की ओर से है; . 19 और वह एक पुत्र जनेगी, और तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपक्की प्रजा को उनके पापोंसे बचाएगा। 20 तब यूसुफ नींद से उठकर इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई

करने लगा, जिस ने उस पर ऐसी कृपा की या, और उस कुँवारी की रक्षा की।

अध्याय XI.

तब हन्ना शास्त्री ने आकर यूसुफ से कहा, हम ने तेरे लौटने के समय से तुझे क्यों नहीं देखा? 2 यूसुफ ने उत्तर दिया, कि मैं ने यात्रा करके थककर पहिले दिन विश्राम किया। 3 परन्तु हन्ना ने मुड़कर देखा कि उस कुँवारी को बड़ा बच्चा है। 4 और याजक के पास जाकर उस से कहा, यूसुफ जिस पर तू ने इतना भरोसा किया है, वह बड़ा बड़ा अपराध करने का दोषी है, कि उस ने उस कुँवारी को जिसे उसने यहोवा

के भवन में से प्राप्त किया था, अशुद्ध कर दिया, और अकेले में ब्याह कर लिया है। उसे, इस्राएल के बच्चों को इसकी खोज नहीं की। 5 तब याजक ने कहा, क्या यूसुफ ने ऐसा किया है? 6 हन्ना ने उत्तर दिया, यदि तू अपके किसी दास को भेजे, तो तू पाएगा कि वह गर्भवती है। 7 तब सेवकों ने जाकर उसके कहने के अनुसार पाया। 8 इस पर उस पर और यूसुफ दोनों पर परीक्षा हुई, और याजक ने उस से कहा, हे मरियम, तू ने यह क्या किया है? 9 तू ने अपनी आत्मा को क्यों बदनाम किया है, और अपने परमेश्वर को भूल गया है, यह देखकर कि तू परमपवित्र स्थान में लाया गया है, और अपना भोजन स्वर्गदूतों के हाथों से प्राप्त किया है, और उनके गीतों को सुना है? 10 तू ने ऐसा क्यों किया? 11 उस

ने आँसुओं की धारा से उत्तर दिया, मेरा परमेश्वर यहोवा जीवित है, मैं उसकी दृष्टि में निर्दोष हूं, क्योंकि मैं किसी को नहीं जानती। 12 तब याजक ने यूसुफ से कहा, तू ने ऐसा क्योंकिया है? 13 यूसुफ ने उत्तर दिया, मेरा परमेश्वर यहोवा जीवित है, मैं ने उस की चिन्ता नहीं की। 14 परन्तु याजक ने कहा, झूठ मत बोलो, परन्तु सत्य का प्रचार करो; तू ने अकेले में उस से ब्याह किया, और इस्राएलियों को उसका पता नहीं लगाया, और अपने आप को पराक्रमी हाथ के नीचे दीन किया है, कि तेरा वंश आशीष पाए। 15 और यूसुफ चुप रहा। 16 तब याजक ने (यूसुफ से) कहा, तुझे उस कुँवारी यहोवा के मन्दिर में जिसे तू ने वहां ले लिया था फेर देना। 17 परन्तु वह फूट-फूट कर रोया, और याजक ने कहा, मैं तुम दोनोंको यहोवा का जल

पिलाऊंगा, [नोट: गिन। 18.] जो परीक्षा के लिये है, और इस प्रकार तुम्हारा अधर्म तुम्हारे साम्हने खुला रहेगा। 18 तब याजक ने वह जल लेकर यूसुफ को पिलाया, और किसी पहाड़ी स्थान पर भेज दिया। 19 और वह ठीक होकर लौट आया, और सब लोग अचम्भा करने लगे, कि उसका दोष प्रगट न हुआ। 20 तब याजक ने कहा, यहोवा ने तो तेरे पापोंको प्रगट नहीं किया, और न मैं तुझे दोषी ठहराता हूं। 21 सो उस ने उन्हें विदा किया। 22 तब यूसुफ मरियम को लेकर इस्राएल के परमेश्वर का आनन्द और स्तुति करते हुए अपके घर चला गया।

अध्याय XII

और ऐसा हुआ, कि एक आदेश निकला [नोट: लूका ii. 1.] सम्राट ऑगस्टस की ओर से, कि सभी यहूदियों पर कर लगाया जाए, जो यहूदिया में बेतलेहेम के थे: 2 यूसुफ ने कहा, मैं इस बात का ध्यान रखूंगा कि मेरी सन्तान पर कर लगाया जाए, परन्तु मैं इस युवती का क्या करूं? 3 मैं उस से अपक्की पत्नी के समान कर वसूलने से लज्जित हूं; और यदि मैं उस पर कर अपनी बेटी के समान कर दूं, तो सब इस्राएल जान जाएगा कि वह मेरी बेटी नहीं है।

4 जब यहोवा के ठहराने का समय आए, तो वह वही करे जो उसे अच्छा लगे। 5 और उस ने गदहे पर काठी लगाई, और उसे उस पर पहिनाया, और यूसुफ और शमौन उसके पीछे पीछे हो लिए, और तीन मील दूर बेतलेहेम को पहुंचे। 6 तब यूसुफ ने मुड़कर मरियम को उदास देखा, और मन ही मन कहने लगा, हो सकता है कि जो कुछ उसके भीतर है उसके कारण उसे पीड़ा हो। 7 परन्तु जब वह फिर गया, तो उस ने उसे हंसते हुए देखा, और उस से कहा, 8 मरियम, क्या होता है, कि मैं तेरे मुख पर कभी शोक, और कभी हंसी और आनन्द देखता हूं? 9 मरियम ने उस से कहा, मैं अपनी आंखों से दो लोगों को देखती हूं, एक रोता और विलाप करता, दूसरा हँसता और आनन्दित होता। 10 और वह फिर मार्ग में गया, और मरियम ने

यूसुफ से कहा, मुझे गदहे पर से उतार ले, क्योंकि जो मुझ में है, वह निकलने को दब गया है। 11 परन्तु यूसुफ ने उत्तर दिया, मैं तुझे कहां ले जाऊं? क्योंकि वह स्थान मरुभूमि है। 12 तब मरियम ने यूसुफ से फिर कहा, मुझे नीचे उतार, क्योंकि जो मेरे भीतर है वह मुझे बल से दबाता है। 13 और यूसुफ ने उसे ले लिया। 14 और उस ने वहां एक गुफा पाई, और उसे उस में जाने दिया।

अध्याय XIII।

और उसे और उसके पुत्रों को गुफा में छोड़ कर, यूसुफ बेतलेहेम के गांव में एक इब्री दाई की तलाश में निकला। 2 परन्तु जब मैं जा ही रहा या (यूसुफ ने कहा) मैं ने ऊपर आकाश की ओर देखा, और मेघोंको चकित होकर, और आकाश के पक्षियोंको उनके बीच में रुकते देखा। 3 और मैं ने पृथ्वी की ओर दृष्टि करके देखा, कि एक मेज फैली हुई है, और उसके चारोंओर काम करनेवाले बैठे हैं, पर उनके हाथ मेज पर थे, और वे खाने को न हिले। 4 जिनके मुंह में मांस था, उन्होंने कुछ न खाया। 5 जिन लोगों ने सिर पर हाथ रखे वे उन्हें पीछे न खींचे। 6 और जितनों ने उन्हें अपके मुंह तक उठाया, उन्होंने कुछ भी न डाला; 7 परन्तु उनके सब मुख ऊपर की ओर स्थिर थे। 8 और

मैं ने भेड़ों को तितर-बितर होते देखा, तौभी भेड़ें स्थिर खड़ी रहीं। 9 और चरवाहे ने उनको मारने के लिथे अपना हाथ बढ़ाया, और उसका हाथ ऊपर उठा। 10. और मैं ने एक नदी की ओर देखा, और बालकोंको मुंह से जल के पास, और उसको छूते हुए देखा, परन्तु उन्होंने न पिया।

अध्याय XIV।

तब मैं ने एक स्त्री को पहाड़ों से उतरते देखा, और उस ने मुझ से कहा, हे मनुष्य, तू कहां जाता है? 2 और मैं ने उस से कहा, मैं एक इब्री दाई को ढूंढ़ने को जाती हूं। 3 उस ने मुझ से कहा, वह स्त्री कहां है जो छुड़ाई जाने वाली है? 4 मैं ने उत्तर दिया, गुफा में, और वह मुझ से ब्याही गई है। 5 तब दाई ने कहा, क्या वह तेरी पत्नी नहीं है? 6 यूसुफ ने उत्तर दिया, वह मरियम है, जो परमपवित्र स्थान में यहोवा के भवन में शिक्षा पाई है, और वह मेरे चिट्ठी पर गिर गई, और मेरी पत्नी नहीं, परन्तु पवित्र आत्मा से गर्भवती हुई है। 7 दाई ने कहा, क्या यह सच है? 8 उस ने उत्तर दिया, आकर देख। 9 और दाई उसके संग चलकर गुफा में खड़ी हो गई। 10 तब एक चमकीले बादल ने गुफा को ढँक दिया, और दाई ने कहा,

आज के दिन मेरा मन बड़ा हो गया है, क्योंकि मेरी आंखों ने अद्भुत काम देखे हैं, और इस्राएल का उद्धार हुआ है। 11 परन्तु एकाएक वह बादल गुफा में ऐसा बड़ा उजियाला बन गया, कि उन की आंखों से वह सह न सका। 12 परन्तु ज्योति धीरे-धीरे घटती गई, जब तक कि शिशु प्रकट न हो गया, और अपनी माता मरियम की छाती को चूस लिया। 13 तब दाई ने पुकार कर कहा, यह दिन कैसा प्रताप का है, जिस में मेरी आंखों ने यह अद्भुत नजारा देखा है! 14 और दाई गुफा में से निकल गई, और सलोमी उस से मिली। 15 और दाई ने उस से कहा, हे सलोमी, हे सलोमी, मैं तुझ को एक आश्चर्यजनक बात बताऊंगी, जो मैं ने देखी, 16 एक कुँवारी निकली है, जो कुदरत के विपरीत है। 17 जिस पर सलोमी ने उत्तर दिया, जब

तक मेरा परमेश्वर यहोवा जीवित है, जब तक मुझे इस बात का विशेष प्रमाण न मिले, तब तक मैं विश्वास न करूंगी, कि कुँवारी कन्या उत्पन्न हुई है। 18 तब सलोमी भीतर गई, और दाई ने कहा, हे मरियम, अपने आप को दिखा, क्योंकि तेरे विषय में बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। 19 और सलोमी को सन्तोष मिला। 20 परन्तु उसका हाथ सूख गया, और वह कराह उठी। 21 और कहा, मेरे अधर्म के कारण मुझ पर हाय; क्योंकि मैं ने जीवते परमेश्वर की परीक्षा ली है, और मेरा हाथ छूटने को तैयार है। 22 तब सलोमी ने यहोवा से बिनती करके कहा, हे मेरे पितरोंके परमेश्वर, मेरी सुधि ले, क्योंकि मैं इब्राहीम, और इसहाक और याकूब के वंश में से हूं। 23 इस्त्राएलियों के बीच मेरी निन्दा न कर, वरन मेरे

माता-पिता के साम्हने मुझे ठीक कर दे। 24 क्योंकि हे यहोवा, तू भली भांति जानता है, कि मैं ने तेरे नाम से बहुत से बड़े काम किए हैं, और तुझ से अपना प्रतिफल पाया है। 25 इस पर यहोवा का एक दूत सलोमी के पास खड़ा हुआ, और कहने लगा, यहोवा परमेश्वर ने तेरी प्रार्थना सुन ली है, और बालक की ओर हाथ बढ़ाकर उसे ले जा, और इस रीति से तू चंगा हो जाएगा। 26 तब शालोमी ने बड़े आनन्द से भरकर बालक के पास जाकर कहा, मैं उसको छूऊंगी; 27 और उस ने उसकी उपासना करने की ठानी, क्योंकि उस ने कहा, यह एक महान राजा है जो इस्राएल में उत्पन्न हुआ है। 28 और सलोमी तुरन्त चंगा हो गया। 29 तब दाई परमेश्वर की प्रसन्नता पाकर गुफा में से निकल गई। 30 और देखो! सलोमी के पास यह शब्द आया,

कि जब तक बालक यरूशलेम में न आ जाए, तब तक जो विचित्र बातें तू ने देखी हैं उनका वर्णन न करना। 31 सो सलोमी भी परमेश्वर की प्रसन्नता पाकर चला गया।

अध्याय XV।

तब यूसुफ जाने की तैयारी कर रहा था, क्योंकि बेतलेहेम में [नोट: मैट। द्वितीय 1, और सी।।] पूर्व से कुछ बुद्धिमान पुरुष, 2 किस ने कहा,

यहूदियों का राजा कहां उत्पन्न हुआ है? क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है, और उसकी उपासना करने आए हैं। 3 यह सुनकर हेरोदेस बहुत व्याकुल हुआ, और पण्डितोंऔर याजकोंके पास दूतोंको भेजकर नगर-भवन में उन से पूछा, 4 और उन से कहा, तुम ने राजा मसीह के विषय में कहां लिखा है, कि वह कहां उत्पन्न होगा? 5 तब वे उस से कहते हैं, यहूदिया के बेतलेहेम में; क्योंकि यह यों लिखा है, कि यहूदा के देश में बेतलेहेम, तू यहूदा के हाकिमोंमें से छोटा भी नहीं, क्योंकि तुझ में से एक हाकिम आएगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल पर राज्य करेगा। 6 और महायाजकों को विदा करके उस ने नगर-भवन के पुरूषों से पूछा, और उस ने उस से कहा, जो राजा उत्पन्न हुआ है उसके विषय में तुम ने क्या चिन्ह देखा? 7 उन्होंने उस को

उत्तर दिया, कि हम ने आकाश के तारोंके बीच एक बड़ा बड़ा तारा चमकते देखा, और सब तारोंमें ऐसा चमका, कि वे दिखाई न पड़ते थे, और हम ने उस से जान लिया, कि इस्राएल में एक बड़ा राजा उत्पन्न हुआ है, और इसलिथे हम उसकी पूजा करने आए हैं। 8 तब हेरोदेस ने उन से कहा, जाकर जाकर यत्न करो; और यदि तुम बालक को पाओ, तो मेरे पास फिर से कह देना, कि मैं आकर उसे प्रणाम करूं। 9 तब पण्डित निकल गए, और क्या देखा, कि जो तारा उन्होंने पूर्व में देखा, वह उनके आगे आगे चला, और उस गुफा के ऊपर खड़ा हो गया, जहां बालक अपक्की माता मरियम के पास या, 10 तब उन्होंने अपके भण्डार में से जई निकालकर उसे सोना, लोबान, और गन्धरस चढ़ाया। 11 और एक स्वर्गदूत ने स्वप्न में यह

चितौनी पाकर कि वे यहूदिया से होकर हेरोदेस के पास फिर न जाएं, और दूसरे मार्ग से अपके देश को चले गए।

अध्याय XVI।

तब हेरोदेस [नोट: मैट। द्वितीय 16.] यह जानकर कि पण्डितों ने उसका ठट्ठा किया है, और बहुत क्रोधित होकर, कितनों को आज्ञा दी, कि जाकर दो वर्ष वा उस से कम के सब

बालकोंको जो बेतलेहेम में थे, मार डालें। 2 परन्तु मरियम ने यह सुनकर कि बालकों को मार डाला जाना है, बहुत डर के मारे बालक को ले लिया, और कपड़े में लपेटकर चरनी में लिटा दिया, [नोट: लूका ii. 7 का उल्लेख किया गया है, हालांकि समय के रूप में गलत तरीके से लागू किया गया था।] क्योंकि सराय में उनके लिए कोई जगह नहीं थी। 3 तब इलीशिबा ने भी यह सुनकर कि अपके पुत्र यूहन्ना की खोज होने पर है, उसे ले जाकर पहाड़ोंपर चढ़ गई, और चारोंओर उसको छिपने का स्थान ढूंढ़ा; 4 और कोई गुप्त स्थान न मिला। 5 तब वह मन ही मन कराह उठी, और कहा, हे यहोवा के पर्वत, बालक समेत माता को ग्रहण कर। 6 क्योंकि इलीशिबा ऊपर नहीं चढ़ सकती थी। 7 और तुरन्त ही पर्वत टूटकर उन्हें ग्रहण कर लिया। 8 और

उन्हें यहोवा का एक दूत दिखाई दिया, जो उनकी रक्षा करे। 9 परन्तु हेरोदेस ने यूहन्ना की खोज की, और जब वह वेदी पर सेवा टहल कर रहा या, तब हेरोदेस ने जकरयाह के पास अपके सेवकोंको भेजकर उस से पूछा, तू ने अपके पुत्र को कहां छिपा रखा है? 10 उस ने उन से कहा, मैं परमेश्वर का सेवक और वेदी का दास हूं; मुझे कैसे पता होना चाहिए कि मेरा बेटा कहाँ है? 11 तब सेवकों ने लौटकर हेरोदेस को सब कुछ बता दिया; जिस पर वह भड़क उठा, और कहने लगा, क्या यह उसका पुत्र इस्त्राएल में राजा होने के योग्य नहीं है? 12 इसलिये उस ने अपके सेवकों को जकरयाह के पास फिर यह कहला भेजा, कि हमें सच बता, तेरा पुत्र कहां है, क्योंकि तू जानता है, कि तेरा प्राण मेरे हाथ में है। 13 तब सेवकों ने जाकर उसे यह सब बताया: 14

परन्तु जकरयाह ने उन से कहा, मैं परमेश्वर के लिथे शहीद हूं, और यदि वह मेरा लोहू बहाए, तो यहोवा मेरा प्राण ग्रहण करेगा। 15 और यह जान लो कि तुम ने निर्दोष का लोहू बहाया। 16 तौभी जकरयाह मन्दिर और वेदी के द्‌वार पर, और विभाजन के विषय में घात किया गया; 17 परन्तु इस्राएली नहीं जानते थे कि वह कब मारा गया। 18 तब नमस्कार के समय याजक मन्दिर में गए, परन्तु जकरयाह अपनी रीति के अनुसार उन से भेंट करके उन्हें आशीर्वाद न दिया; 19 तौभी वे अब भी उस की बाट जोहते थे, कि वह उन्हें नमस्कार करे; 20 और जब उन्होंने पाया कि वह बहुत दिन से न आया, तब उन में से एक उस पवित्र स्थान में जहां वेदी थी, गया, और उस ने भूमि पर पड़ा हुआ लोहू छिपा हुआ देखा; 21 जब देखो, स्वर्ग से यह शब्द

निकला, कि जकरयाह मारा गया है, और उसका लोहू तब तक न मिटाया जाएगा, जब तक कि उसके लोहू का पलटा लेने वाला न आए। 22 परन्तु यह सुनकर वह डर गया, और जाकर जो कुछ उस ने देखा और सुना था, वह याजकोंको बताया; और सब ने भीतर जाकर सच्चाई को देखा।23 तब मन्दिर की छतें गरज उठीं, और ऊपर से नीचे तक फट गईं। 24 और वे लोथ न पा सके, परन्तु लोहू ही पत्थर के समान कठोर हो गया। 25 और उन्होंने घबराकर लोगों से कहा, कि जकरयाह मारा गया, और इस्राएल के सब गोत्रोंने यह सुनकर उसके लिथे विलाप किया, और तीन दिन तक विलाप किया। [नोट: राजा; उन्होंने निर्दोषों का लोहू बहाया; उन्होंने आंगन को अपवित्र किया; वह दिन सब्त का दिन था: और प्रायश्चित का दिन। इसलिथे

जब नबूजरदान वहां (अर्थात् यरूशलेम) आया, उस ने अपके लोहू को बुदबुदाते हुए देखा, और उन से कहा, इसका क्या अर्थ है? उन्होंने उत्तर दिया कि यह बछड़ों, मेमनों और मेढ़ों का खून है, जिसे हमने वेदी पर चढ़ाया है। तब उस ने आज्ञा दी, कि वे बछड़े, और भेड़ के बच्चे, और मेढ़े ले आएं, और कहा, कि मैं परखूंगा, कि क्या यह उनका लोहू है; उसी के अनुसार वे उन्हें ले आए और मार डाला, परन्तु (जकर्याह) का लहू अब भी बुदबुदाया, परन्तु इन का लोहू बुलबुला नहीं। फिर उस ने कहा, मुझे इस बात का सच बता, नहीं तो मैं तेरे मांस में लोहे के कंघोंमें कंघी करूंगा। तब उन्होंने उस से कहा, वही याजक, और भविष्यद्वक्ता और न्यायी था, जिस ने उन सब विपत्तियोंकी जो हम ने तुझ पर पड़ी हैं, इस्राएल को भविष्यद्वाणी की थी; परन्तु हम

ने उसके विरुद्ध उठकर उसे घात किया। तब उस ने कहा, मैं उसको प्रसन्न करूंगा; तब उस ने खरगोशोंको लेकर अपने (अर्थात् जकरयाह के) लहू पर मार डाला, और वह अब तक शांत नहीं हुआ। इसके बाद उसने बच्चों को स्कूलों से ले लिया, और उन्हें अपने खून पर मार डाला, और फिर भी वह बुदबुदाया। तब वह युवा याजकों को ले आया और उसी स्थान पर घात किया, तौभी वह अभी भी बुदबुदा रहा था। तब उस ने चौरासी हजार पुरूषोंको अपके लोहू से मार डाला, और वह अभी तक बुदबुदाया नहीं। तब वह उसके पास जाकर कहने लगा, हे जकर्याह, हे जकर्याह, तू ने अपने देश के प्रधानोंको मार डाला है; क्या मैं उन सबका वध कर दूं? तब लोहू बन्द हो गया, और फिर बुलबुला न रहा।"]
26 तब याजकों ने एक पुरूष के विषय में विचार किया

कि उसके स्थान पर कोई व्यक्ति हो। 27 तब शिमोन और अन्य याजकोंने चिट्ठी डाली, और चिट्ठी शिमोन पर डाली गई। 28 क्योंकि उस को पवित्र आत्‍्मा ने आश्वासन दिया था, कि जब तक वह मसीह को देहधारण करते हुए न देख ले, तब तक वह न मरे। [नोट: ल्यूक द्वितीय। 26.]

मैं याकूब ने यह इतिहास यरूशलेम में लिखा: और जब विपत्ति आई, तो मैं सुनसान स्थान पर गया, हेरोदेस की मृत्यु तक। और यरूशलेम में अशांति समाप्त हो गई। जो शेष रह जाता है वह यह है कि मैं परमेश्वर की महिमा करता हूं कि वह पवित्र है; मुझे ऐसी बुद्धि दी है कि मैं तुम्हें

लिखूं जो आत्मिक हैं, और जो परमेश्वर से प्रेम रखते हैं: जिनकी महिमा और प्रभुता सदा सर्वदा बनी रहे, आमीन।